दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10/07/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): _____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियो,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये। $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।

उपर्युक्त पद्यांश कबीर दास की साखियों के संकलन में 'गुरुदेव को अंग' से उद्धृत है। इसके द्वारा कबीर गुरु की महिमा का बखान कर रहे है।

कबीरदास कहते है सतगुरु ने तीर कमान से मुझ पर निशाना लगाया अर्थात् सतगुरु ने प्रेम रूपी तीर से मुझे प्रेम का पाठ पढाया।

आगे कबीर जी कहते है उनके तीर में से एक मुझे लग गया अर्थात् इन शब्द रूपी तीर ने मुझे बाहर से प्रभावित तो किया ही साथ ही में अंदर तक उससे प्रभावित हो गया। अर्थात् मुझे निर्गुण-निराकार ब्रह्म का ज्ञान हो गया।

इस प्रकार कबीर ने शब्द रूपी तीर के द्वारा गुरु द्वारा उसे अनन्त ब्रह्म के दर्शन कराने को वर्णित किया है।

कबीर ने इसी पकार एक अन्य साखी मे गुरु का वर्णन करते हुये उनकी तुलना ईश्वर से भी है। अंतत: गुरु को ईश्वर से महान पाते है -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय ॥"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
ything except the
estion number in
is space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

(ख) निरखत अंक स्यामसुंदर के बार बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।।
गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुँ बयारि लगी नहिं ताती।
तब की कथा कहा कहौं, ऊधो, जब हम बेनुनाद सुनि जाती।।
हरि के लाड़ गनति नहिं काहू निसिदिन सुदिन रासरसमाती।
प्राननाथ तुम कब धौं मिलोगे सूरदास प्रभु बालसँघाती।।

प्रस्तुत पद्यांश शुक्ल जी द्वारा संकलित 'सूरसागर' से लिया है। इस पद्यांश में सूरदास ने ऊधव के ब्रज जाने पर भाव-विभोर गोपियों की दशा का वर्णन किया है।

कृष्ण के विरह में दग्ध गोपियाँ कृष्ण द्वारा भेजी गई चिट्ठी के अक्षरों को बार-बार ~~छाती~~ हृदय से लगाती है तथा देखती है। वे इतनी ~~व~~ भाव-विभोर हो गई है कि उनकी आँखों से आँसू बह रहे है, जिसके कारण चिट्ठी भीग कर ~~स्याम~~ कृष्ण की भाँति श्याम रंग की हो गई है।

वे ~~ब~~ ऊधव से कहती है कि गोकुल की हवा कृष्ण के साथ रहते हुये कभी गर्म प्रतीत नहीं हुई अर्थात् हमेशा शीतलता का अनुभव देती थी। वे अपनी पूर्वस्मृति में जाकर कहती है तब ~~श्री~~कृष्ण बाँसुरी बजाते थे तो हम बेसुध दौड़ कर चली जाती थी।

आगे वे फिर कहती है कि श्रीकृष्ण के साथ हम दिन-भर रासलीला करती रहती थी तथा उनके प्रेम में मग्न रहती थी। आगे वे कृष्ण को याद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

करते हुये कहती है कि हे प्राणनाथ आपके दर्शन कब होंगे आप हमारे बचपन के सखा हो।

इस प्रकार सूर ने गोपियों की कृष्ण से प्रेम तथा भावप्रेरित वाग्विदग्धता को दर्शाया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) रोई गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई । पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी । जासौं पाव सोहाग सुनारी ।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा । कोनि सो घरी करै पिउ फेरा? ।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा । रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोंरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा ।।
बरस दिवस धनि रोई कै, हारि परी चित झँखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

यह पद्यांश अवधी के अरधान मलिक मोहम्मद जायसी कृत पदमावत से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में रत्नसेन के विरह में नागमती द्वारा किस तरह बारहमासा गीत गाया गया इसका वर्णन है।

नागमती अपने पति रत्नसेन के विरह में बारहमासा गा रही है। एक-एक साँस में हजारों दुख महसूस करती है। थोड़ी-थोड़ी चलती हुई वह गिर जाती है तथा एक-एक पहर उसे युग के समान प्रतीत होता है।

वह कहती है कि हे प्रियतम आपके आने से ही मेरा रूप पूर्ववत होगा। साँझ के समय वह रास्तों को निहारती है और अपने प्रियतम के आने का इंतजार करती है।

अपने प्रियतम के विरह में वह जलकर कोयले की भाँति हो गई है तथा विरह में जलकर उसके शरीर का मांस समाप्त हो गया है अर्थात् उसका

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शरीर अत्यन्त क्षीण हो गया है। उसके शरीर में रक्त की मात्रा नहीं बची और आंखों से आँसू रक्त के समान बह रहे हैं।

नागमती का विरह वर्णन करते हुये जायसी ने स्पष्ट किया है कि वह दिन भर रोती रहती है जैसे घर-घर जा के पंक्षी के पंख थक जोती है वैसे वह प्रत्येक मनुष्य से पूछते-पूछते थक गई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) शत घूर्णावर्त, तरंग-भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पद्यांश सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखी गई हिन्दी की श्रेष्ठतम लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से लिया गया है। इस ~~पद्य~~ पद्यांश में राम के अश्रु आने पर हनुमान द्वारा रौद्र रूप धारण कर लिये जाने का वर्णन है।

हनुमान के रौद्र रूप धारण करने पर ~~चारों~~ सैंकड़ो चक्रवातों की भाँति हवा बहने लगी उसके प्रभाव में पहाड़ उड़ते हुये प्रतीत होने लगे। समुद्र की जल राशि समुद्र से निकल कर पहाड़ चढ़ने लगी अर्थात् चक्रवात के प्रभाव में सुनामी के समान स्थिति होने लगी। समुद्र का जल अपने बंधनों को तोड़ता हुआ आगे बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ।

अर्थात् ~~है~~ हनुमान ने रौद्र रूप धारण कर कैलाश पर्वत को निगलने की शपथ खा ली थी उसी प्रभाव में चारों ओर चक्रवात के समान स्थिति उत्पन्न हो गई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'कबीर का मूल व्यक्तित्व कुछ भी हो, उनके काव्य की श्रेष्ठता में कोई संदेह नहीं।' विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर भक्तिकाल के प्रमुख कवि है। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण उनका मूल व्यक्तित्व क्या है? यह हमेशा चर्चा का विषय रहा है। कोई उन्हे कवि रूप में मानता है तो कोई समीक्षक भक्त होने का दावा करता है।

वस्तुत: कबीर के मूल व्यक्तित्व के संदर्भ में विवाद भले ही हो किन्तु उनके काव्य की श्रेष्ठता सभी संदेहों से परे है। कबीर के काव्य में तत्कालीन समाज की विद्रुपताओं का वर्णन तो मिलता ही है साथ ही समाज को नैतिकता का पाठ भी पढ़ाते है।

चूंकि कबीर एक भक्त, कवि, समाज सुधारक तथा संत के व्यक्तित्व का मिश्रण थे अत: यह उनके काव्य में दिखाई देता है। एक समाज सुधारक होने के नाते वे समाज की समस्याओं तथा आडम्बरों को सूक्ष्मता से देखते है तथा उन पर चोट करते है-

"पाहन पूँजै हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार
ता ते चाकी भली, पिस खाये संसार ॥"

"कांकर पाथर जोरी के, मस्जिद लई बनाय
ता चढि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय ॥"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर के काव्य की श्रेष्ठता इस रूप में भी है कि वे किसी धर्म विशेष का पक्ष लिये बिना समान रूप से प्रहार करते है।

कबीर के काव्य की श्रेष्ठता वहाँ भी नजर आती है जब वे समाज के दुःखों से दुःखी होते है तथा संत होने के नाते सामाजिक विषय-भोगों से बचते है -

" सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवे।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै ॥"

कबीर पर नाथ परम्परा का प्रभाव होने के कारण वे अपने काव्य के माध्यम से गुरु की महिमा को भी स्थापित करते है -

" पाछे लागा जाई था, लोक वेद के साथि।
आगे ते सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि ॥"

कबीर के काव्य की श्रेष्ठता का आधार उनकी भाषा तथा बिम्ब निर्माण क्षमता थी। द्विवेदी जी के शब्दों में "कबीर वाणी के डिक्टेटर है"। उन्होंने तत्कालीन लोकभाषा को काव्यभाषा के रूप में चुना तथा संस्कृत को 'कूप जल' कहते हुये नकार दिया। उनकी महत्ता इस बात से भी स्पष्ट होती है कि उन्होंने 'कागद' व 'मसि' को कभी हाथ नहीं लगाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद उनके काव्य को सूफी प्रेमाश्रयी कवियों के समकक्ष खड़ा करता है।

"तलफै बिनु बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया,
तलफ-तलफ के भोर किया॥"

इस प्रकार स्पष्ट है कि निरक्षर होने के बाद भी कबीर का सूक्ष्मद्रष्टा होना उनके काव्य को श्रेष्ठ बनाता है वे हृदय से हृदय तक चोट करते हैं तथा उनकी व्यंग्य क्षमता सर्वश्रेष्ठ है।

लोक भाषा को काव्य में प्रयुक्त करने के बाद भी उसमें अलंकारिता तथा बिम्ब तत्वों का समावेश उनकी एक विशिष्टता है -

"जल में कुंभ, कुंभ में जल, बाहर-भीतर पानी।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कबीर का काव्य उनके व्यक्तित्व की भाँति बहुआयामी है, जो उसे समाज सुधार के साथ नैतिक प्रतिमानों की स्थापना में उपयोगी बनाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ [illegible]।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) वक्रता और वाग्विदग्धता के धरातल पर भ्रमरगीतसार का आधार लेते हुए कवि सूरदास का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरदास श्रृंगाररस के कवि है। उन्होंने कृष्ण गोपियों के श्रृंगार का विशद वर्णन किया है किन्तु सूर की गोपियों की भाव प्रेरित वक्रता तथा वाग्विदग्धता सूरसागर का प्राणतत्व है।

वक्रता तथा वाग्विदग्धता एक शैली है, जिसमें सीधी बात न कहकर प्रतीकों के माध्यम से वह बात कहने का प्रयास किया जाता है। श्रीकृष्ण जब मथुरा चले गये तथा वहाँ से ऊधव को ब्रज योग का ज्ञान देने भेजा तब गोपियों ने जिस तरह अपना पक्ष रखा, ऊद्धव पर व्यंग्य किये तथा उनके सिद्धांतों का खंडन किया, वह दर्शनीय है।

जब ऊधव गोपियों से कृष्ण को भूलने की कहते है तथा योग को अपनाने की बात कहते है तब गोपियों द्वारा कहीं गई बाते सूरदास की श्रेष्ठता को दर्शाती है उन्होंने जिन लोकजीवन के उदाहरणों के माध्यम से निरक्षर गोपियों को ज्ञानी उद्धव पर विजय दिलाई वह उनको श्रेष्ठ बनाता है। सूर की गोपियां कहती है-

" उर में माखन चोर गड़े
अब कैसेहु निकसत नाहि। टेड़े है ज्यू अड़े ।।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी प्रकार गोपियों द्वारा निर्गुण योगमार्ग का जिस तरह मजाक उड़ाया है वह सूरदास की महानता है क्योंकि निर्गुण - सगुण विवाद तत्कालीन समय में सबसे बड़ा विवाद था किन्तु सूर ने गोपियों के माध्यम से उसका खंडन किया। गोपियां व्यंग्य करते हुये कहती है -

"निरगुण कौन देस को वासी?
मधुकर! हसि समुझाय सौंह दे, बूझति साँचि
को है जनक, जननी को कहियत, कौन नारि को दासी।"

सूर की श्रेष्ठता इस बात में दिखाई देती है कि जब गोपियों के तर्कों को झेलने के बाद उद्धव को यह महसूस हो गया कि उसका स्वयँ का निर्गुण योग नीरस है तब वे निरक्षर गोपियों के माध्यम से उद्धव को ज्ञान का संदेश भी दिलाते है। जिस प्रकार जायसी ने पदमावत में प्रकृति को गुरू (गुरु सुवा जेहि पंथ दिखावा) रूप में प्रतिष्ठित किया उसी तरह सूरदास ने भी गोपियों के द्वारा प्रकृति को गुरु रूप में स्थापित किया।

" ऊधौ कोकिल कूजत कानन।
तुम हमको उपदेश करत हो, भस्म लगावत आनन ॥"।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ ।
do not write g except the n number in ce)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि सूर ने अपनी क्षमता का परिचय देते हुये वक्रता तथा वाग्विदग्धता का सटीक उपयोग किया है, जो उन्हे पूर्व कवियों से मौलिक व श्रेष्ठ बनाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कबीर तथा तुलसी भक्तिकाल के दो महान कवि है जो क्रमशः निर्गुण तथा सगुण मार्गी है किन्तु दोनो की श्रेष्ठता यह है कि वे दोनो का समन्वय भी करते है। इसी आधार पर यह प्रश्न खड़ा होता है कि दोनों में से किसे लोकनायक की संज्ञा दी जाये।

चूंकि दोनो कवियों की अपनी श्रेष्ठता है तथा अपनी-अपनी विशेषतायें है अतः किसी एक के लोकनायक का निर्धारण करने के लिए कुछ मापदण्डों पर उनके काव्य को कसना होगा।

- किसका काव्य लोकमंगल की साधनावस्था से युक्त है।
- किसका काव्य जनता के अधिक निकट है।
- किसके काव्य की वर्तमान प्रासंगिकता है।

उपर्युक्त मापदण्डों के आधार पर लोकनायक का निर्धारण ~~श्रेष्ठ~~ करना श्रेष्ठतम होगा।

लोकमंगल की साधनावस्था के आधार पर देखा जाये तो कबीर जब कहते है 'सुखिया संसार' सोता है व 'दुखिया कबीर' रोते है तथा साथ ही वे समाज की खुशी के लिए धरफूंक मस्ती वाला भाव भी रखते है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स स्थान में प्रश्न
े अतिरिक्त कुछ
।
do not write
g except the
n number in
ce)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" मैं घर जारा आपना, लिया मुराड़ा हाथ।"

वहीं दूसरी ओर तुलसीदास भी तत्कालीन समाज की समस्याओं को सूक्ष्मता से देखते है। वे समाज। अर्थव्यवस्था, राजनीति पर अपनी दृष्टि डालते है तथा कहते है-

"दैहिक दैविक, भौतिक तापा, रामराज्य काहुहि नहिं व्यापा।"

काव्य के प्रसार की दृष्टि से देखा जाये तो जहाँ कबीर ने 'संस्किरत है कूप जल' के आधार पर संस्कृत को खारिज किया तो वहीं तुलसीदास ने भी आंतरिक खुशी के लिए अवधी को चुना। उनके काव्य की जनता से जुड़ाव निम्न स्तर पर देखा जा सकता है-

"गुरु गोविन्द दोऊ खडे, काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।"
(कबीर)

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधिमाई।" (तुलसी)

वर्तमान प्रासंगिकता के आधार पर देखा जाये तो वर्तमान की समस्याओं के आलोक में कबीर ने साम्प्रदायिकता, धार्मिक आडम्बरों तथा जातिगत भेदभाव को ~~अवश्य~~ उजागर करते हुये उस

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चोट की थी।

"हिन्दु कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ते, मरम कोउ नहीं जाना॥"

तो तुलसीदास की समन्वयकारी दृष्टि वर्तमान की सबसे अधिक आवश्यकता प्रतीत होती है। तुलसी ने सभी विरोधाभासों का समन्वय का प्रयास किया।

"अगुनहिं-सगुनहिं नहिं कछु भेदा।"

अतः उपर्युक्त आधार पर देखा जाये तो दोनों समान रूप से लोकनायक कहे जाने के अधिकारी है किन्तु यदि दोनो में से किसी एक को चुनने की बात होने पर कबीर दास को लोकनायक मानना अधिक उपयुक्त होगा।

क्योंकि तुलसी के काव्य में कहीं-कहीं ब्राह्मणवादी मानसिकता दिखाई देती है जबकि कबीर ने इन्ही ब्राह्मणवादी मानसिकताओं से लड़ते हुये काव्य की रचना की। अतः कबीर का संघर्ष उन्हे लोकनायक के पद का उपयुक्त अधिकारी बनाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना की उसके परवर्ती काल में नवीन आयामों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। अपनी श्रृंगारिकता तथा वाग्विदग्धता की श्रेष्ठता के बावजूद सूरसागर का आधुनिक राजनीतिक आयाम विशिष्ट है।

आधुनिक संदर्भ में देखे तो कृष्ण की भाँति जो जनता का प्रिय नेता होगा वही चुनाव में विजयी होगा तथा जिस तरह कृष्ण मथुरा गये है वह दिल्ली अर्थात संसद में आयेगा।

कृष्ण मथुरा आने के बाद पुन: ब्रज नहीं जाते तथा गोपियाँ उनके विरह में दुखी है तथा कृष्ण द्वारा दिये गये वादों को याद करती है उसी तरह कोई राजनेता लोकलुभावनी घोषणाओं के आधार पर विजयी तो हो जाता है किन्तु जीतने के बाद वह पुन: उस क्षेत्र में नहीं जाता है तथा वहाँ के मतदाता चुनावी वादों को पूरा होने का इंतजार करते है।

कृष्ण द्वारा उद्धव को मथुरा भेजना तथा गोपियों को योग की शिक्षा देना भी एक प्रकार से वर्तमान राजनेता द्वारा अपने बिचौलियों को भेजकर जनता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का गुस्सा शांत करके उन्हें मूल विषय से भटकाना है। जिस प्रकार कृष्ण उद्धव को भेजकर गोपियों के गुस्से का शिकार होने से बच जाते है, उसी तरह राजनेता भी बिचौलियों को भेजकर गुस्से का शिकार होने से बच जाते है।

उद्धव को गोपियों द्वारा डांटना, ज्ञान की बातें कहना तथा कृष्ण को वापस ब्रज आने के लिए कहना भी वर्तमान राजनीति - जनता प्रवृत्ति को को दर्शाता है।

किन्तु संभव है कि ~~उद्धव~~ ने सूरदास ने इस संदर्भ में इसकी रचना नहीं की हो अथवा हो भी सकता है कि उनका यही संदर्भ रहा हो क्योंकि वे तत्कालीन राजनीति से परिचित थे। गोपियों के माध्यम से 'वह मथुरा काजर की कोठी। तथा हरि हैं राजनीति पढ़ि आये' आदि कहलवाना उनकी राजनीतिक ज्ञानशक्ति को स्पष्ट करता है।

किसी भी रचना का परवर्तीकाल में अनेक आयामों पर पुनर्मूल्यांकन किया जाता है। इसी आधार पर सूरसागर का भी हुआ तथा कुछ मायनों में यह राजनीतिक संदर्भ में भी प्रयुक्त हुआ किन्तु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
stion number in
space)

ऐसे सूर की दृष्टि भ्रम लेना उनके साथ अन्याय होगा।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उद्धव का ब्रज जाना तथा गोपियों को समझना भले ही वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य से थोड़ा बहुत मेल खाता हो किन्तु तत्कालीन संदर्भ में वह उपयुक्त नहीं है।

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
ything except the
estion number in
is space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित रामराज्य की अवधारणा की समालोचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति काव्यधारा के शिखर कवि है तथा अपनी समन्वयकारी दृष्टि के साथ ~~काव्य~~ उनकी रचनाएँ भी श्रेष्ठ है। चूँकि तुलसीदास दास्य भक्ति को श्रेष्ठ मानते थे अतः उसी आधार पर उन्होंने अपने पूज्य राम के रामराज्य की अवधारणा दी।

तुलसीदास ने कलियुग के प्रत्युत्तर में रामराज्य की अवधारणा को प्रकट किया। ~~कलियुग~~ उनके रामराज्य की विशेषताएँ निम्न है -

रामराज्य में कलियुग की भाँति किसी तरह का कोई संकट तथा विपत्ति नहीं रहेगी, जो अकाल की समस्या 'कलि बारहिं बार अकाल पड़ै' के द्वारा उन्होंने कलियुग की विशेषता बताई थी वह रामराज्य में नहीं है। रामराज्य की मूल विशेषता वहाँ व्यक्तियों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होगी अर्थात् सुलभ पदारथ चारि तथा कोई ताप नहीं होगा।

"दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। राम राज्य काहुहिं नहिं व्यापा।"

• कलियुग में राजव्यवस्था पर संकट आ गया था तथा पापी लोग स्वयं ही राज संभालने लगे थे तथा केवल दण्ड ही विद्यमान था -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"साम न दाम न विधि, केवल दण्ड करात।"

किन्तु रामराज्य में किसी भी तरह का दण्ड नहीं है बल्कि विधि द्वारा शासन चलाया जाता है।

उसी प्रकार तुलसीदास ने कलियुग में वर्णव्यवस्था के समाप्त होने का दुःख व्यक्त किया है तो रामराज्य में सभी प्रकार के वर्ण धर्म का पालन होगा।

इस प्रकार तुलसी के रामराज्य की परिकल्पना वर्तमान समय में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा करती है और इनका रामराज्य किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित न रहकर सम्पूर्ण पृथ्वी पर विस्तृत होगा।

किन्तु वर्णव्यवस्था के पालन की दृष्टि के आधार पर कुछ आलोचक तुलसीदास को कठघरे में खड़ा करते है। उनका आरोप है कि ब्राह्मणवादी मानसिकता के कारण तुलसीदास ने ऐसा कहा है। ताकि निम्नवर्णों का उत्थान वैदिककाल से चला आ रहा शोषण जारी रहे।

किन्तु इस आक्षेप को लगाने से पूर्व उनकी दृष्टि को भी जान लेना आवश्यक है तुलसीदास ने वर्णव्यवस्था को केवल निम्नवर्ण के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिए ही पर्याप्त नहीं किया बल्कि उनके अनुसार ब्राह्मण भी अपने कार्य से भटकाव होने पर वर्ण धर्म का पालन नहीं करता।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि तुलसी का रामराज्य वर्तमान समय की आवश्यकता ही नहीं बल्कि अनिवार्यता भी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) काव्यात्मकता की दृष्टि से कबीर की भाषा का अनुशीलन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की भाषा के संबंध में यह विवाद हमेशा रहा है कि कबीर द्वारा प्रयुक्त भाषा को काव्य भाषा माना जाये या नहीं?

वस्तुतः कबीर की अक्खड़ता तथा गालीनुमा भाषा को शुक्ल जी ने काव्यभाषा मानने से ही मना कर दिया था वहीं द्विवेदी जी के अनुसार-

"कबीर का भाषा पर जबरदस्त अधिकार था, उन्होंने ~~किस~~ बात को जिस रूप में कहना चाहा, कहा। सीधे बन पड़ा तो सीधे वरना दरेरा देकर। भाषा उनके सामने लाचार थी।"

इस प्रकार यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न बन जाता है कि कबीर की भाषा की काव्यात्मकता किस स्तर की है।

कबीर की भाषा की मुख्य विशेषता उसका संदर्भ में सटीक होना। मुल्लों पर आक्रमण करते समय उनकी भाषा में फारसी शब्दावली तो पंडे से वार्तालाप के समय तत्सम शब्दावली का प्रयोग उनकी भाषा की काव्यात्मकता को सटीक स्पष्ट करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

→ "पाहन पूजै हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।"

→ "कांकर-पाथ जोरी कै, मस्जिद लई बनाय।"

कबीर की भाषा की एक मूल विशेषता इसकी अलंकारिता एवं तथा बिम्बनिर्माण है। कबीर की साखियों की अलंकारिता तथा बिम्ब क्षमता कई बार बिहारी के स्तर की दिखाई देती है। उदाहरण के लिए -

"जल में कुंभ कुंभ में जल, बाहर-भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहि समाना, इहै तथ कहैं ग्यानी॥"

अलंकारों की दृष्टि से भी कबीर की भाषा पर्याप्त काव्यात्मक गुणों को धारण करती है। उनकी भाषा की रहस्यात्मकता भले ही प्रसाद गुण को कम करती हो किन्तु काव्य की दृष्टि से तो उसे महत्वपूर्ण प्रतीकात्मकता प्रदान करती है -

"कबीर दास की उल्टी बानी
बरसै कम्बल, भीजै पानी।"

"नदिया बिच नैया डूबी जाय।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संस्कृत को नकार कर सधुक्कड़ी भाषा को काव्य भाषा के रूप में प्रयुक्त कर उसमें काव्यात्मकता के गुणों को उत्पन्न करना कबीर की महान उपलब्धि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) लेकिन जैसे ही ख़बर शहर में पहुँची, वहाँ से मंत्रियों, नेताओं और अख़बारनवीसों की गाड़ियों का ताँता लग गया। आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गए, पर शहरी गाड़ियों से उठनेवाली धूल के बादल कई दिन तक मँडराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रुँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े-बड़े आश्वासन दिए। अख़बारनवीस आए तो दनादन उस राख के ढेर की ही फोटो खींचकर ले गए। दूसरे दिन अख़बार में छापकर घर-घर पहुँचा भी दिया–इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे खुमारी में अँगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथ पढ़ा, देखा। देखते ही चेहरे पर विषाद की गहरी छाया पुत गई। चाय का घूँट भी कड़वा हो गया शायद। ढेर सारी सहानुभूति और दुख में लिपटकर निकला–'ओह, हॉरिबल...सिम्पली इनह्यूमन! कब तक यह सब और चलता रहेगा? त्...त्...त्!' और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँववालों की ज़िंदगियों की तरह ही अख़बार भी रद्दी के ढेर में जा पड़ा।

प्रस्तुत गद्यांश मन्नू भंडारी के राजनीतिक उपन्यास महाभोज से लिया गया है इस उपन्यास में बिसु की मौत के बाद अखबार मे खबर छपने पर शहरी लोगों के व्यवहार को दर्शाया है।

बिसू के मौत की खबर जैसे ही शहर पहुँची तो शहर के सभी आला-अधिकारी इसका राजनीतिक लाभ लेने में जुट गये। लेखिका ने व्यंग्य करते हुये कहा कि मौत का दुःख बढाने के लिए वे धूलरूपी बादल के साथ उपस्थित होते थे। राजनीतिक लाभ लेने के लिए बिसु के परिजनों तथा ग्रामीणों से बड़े-बड़े वादे किये गये।

अखबार वाले अपने व्यापार को बढ़ाने के

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिए कई प्रकार की फोटो ले गये। जब शहर में यह खबर पहुँची तो शहरी लोगों ने इस घटना पर अफसोस जताया किन्तु यह अफसोस क्षणिक था क्योंकि कुछ ही देर बाद वह अखबार रद्दी में चला गया तथा किसी की मौत क्यों हुई उस पर कोई चर्चा नहीं की गई।

इस गद्यांश में लेखिका ने संवेदनहीनता को उजागर करते हुये राजनेताओं, अखबार वाले पत्रकारों तथा शहरी मध्यवर्ग के दोहरे चरित्र को उजागर किया है कि किस तरह सुविधाओं की लालसा संवेदनहीनता उत्पन्न करती है।

इसी तरह की संवेदनहीनता मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' कविता में भी दिखाई देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित

प्रस्तुत पंक्तियाँ ~~सांस्कृतिक चेतना के सम्बन्ध~~

~~लेखक जयशंकर प्रसाद के उपन्यास स्कन्दगुप्त~~ से
निबंध कविता क्या है? से ~~लिखित गयाहै~~।
~~से लिया गई है~~। इन पंक्तियों में ~~[illegible]~~ लेखक द्वारा कविकर्म की महिमा का वर्णन किया है।

लेखक ~~[illegible]~~ कविता तथा कविकर्म के संदर्भ में कहता है कि किसी कवि की सृजनशीलता एक चित्र की भाँति है जो उसे किसी विषय की गहराई तक जा के चित्र लेने ~~का~~ में सहायता करती है। अर्थात कवि भावनाओं का भी चित्रण करने में सक्षम है।

कविता की मूल विशेषता है कि वह विपरीत गुणों को भी एक साथ लाने का प्रयास करती है। अंधकार को प्रकाश से, सत्य तथा असत्य को, जड़ता को चेतनता से मिलन कराती है। साथ ही बाह्य जगत को आंतरिक जीवन से जोड़ती है अर्थात बाहरी जगत के आधार पर आंतरिक कल्पनाओं को उत्पन्न करती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

असाध्य वीणा कविता में जिस तरह नायक केवल कल्पना के माध्यम से वीणा से एकाकार कर उसका वादन करता है उसी तरह इन पंक्तियों में लेखक स्पष्ट करना चाह रहे हैं कि कवित्व कल्पना को भी वास्तविक धरातल पर लाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारते बनायीं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय-योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाज़िरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त पंक्तियाँ एक दुनिया समानान्तर की कहानी 'भोलानाथ का जीव' से ली गई है। इस कहानी के लेखक हरिशंकर परसाई है। इन पंक्तियों में लेखक ने भ्रष्टाचार पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

यमराज कहते है कि पृथ्वी पर भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि वहाँ से आने वाले लोग यहाँ अर्थात् नर्क में अच्छी भूमिका निभा रहे है अर्थात् इन लोगो ने पृथ्वी पर भ्रष्टाचार के माध्यम से सरकारी योजनाओं का पैसा खाया। मजदूरों के फर्जी हस्ताक्षरों से उनका भी धन खा गये।

किन्तु अब नर्क में उस तरह का व्यवहार नहीं हो रहा अर्थात् न तो कोई भ्रष्टाचार दे रहा है और न ही प्रशासन भ्रष्टाचार में लिप्त है अतः इन कारीगरों को पूरा कार्य करना पड़ रहा है, जिसके कारण बहुत ही कम समय में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उच्च गुणवत्ता का कार्य हुआ। यहाँ लेखक यह दिखाना चाह रहे हैं कि इनकी प्रतिभा पर शक नहीं किया जा सकता किन्तु वहाँ प्रशासनिक अक्षमता ने इन्हें भ्रष्टाचारी बनाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है। अब सोने का समय नहीं है। अँगरेज का राज्य पाकर भी न जगे तो कब जागोगे। मूर्खों के प्रचंड शासन के दिन गए, अब राजा ने प्रजा स्वत्व पहिचाना। विद्या की चरचा फैल चली, सबको सब कुछ कहने-सुनने का अधिकार मिला, देश-विदेश से नई-नई विद्या और कारीगरी आई। तुमको उस पर भी वही सीधी बातें, भाँग के गोले, ग्रामगीत, वही बाल्यविवाह, भूत-प्रेत की पूजा, जन्मपत्री की विधि! वही थोड़े में संतोष, गप हाँकने में प्रीति और सत्यानाशी चालें! हाय अब भी भारत की यह दुर्दशा!

उपर्युक्त गद्यांश नवजागरण के लेखक 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' द्वारा लिखित नाटक 'भारत-दुर्दशा' से लिया गया है। इस गद्यांश में लेखक पश्चिमी ज्ञान विज्ञान की श्रेष्ठता को ग्रहण करने का अनुरोध करते है।

लेखक ने कहा है कि अब मध्ययुगीन अंधकार का युग समाप्त हो गया है अतः तुम पश्चिम से जो विद्या रूपी सूर्य ब्रिटिश शासन के साथ भारत में आया है, उसको अपना लो क्योंकि ज्ञान-विज्ञान ही भविष्य में भारत के विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

वे ब्रिटिश शासन की अच्छाईयों के बारे में कहते है कि सबको स्वतंत्रता, शिक्षा तथा बंधुत्व का अधिकार प्राप्त हुआ। नई-नई तकनीकें प्राप्त हुई है। इन तकनीकों के माध्यम से मध्यकालीन अंधकार को हटाकर भविष्य को उज्ज्वल बनायें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही भारतेन्दु ने कहा कि जो भी यहाँ की बुराईयाँ है - बाल विवाह, भांग - मदिरापान, धार्मिक कर्मकाण्ड उनका त्याग करों।

एक अन्य जगह भारतेन्दु ने कहा भी है -

"जानि सकैं सबकुछ सबहि, विविध कला के भेद।
बनै वस्तु कल की इतैं, मिटत दीनता खेद।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' स्कंदगुप्त के संदर्भ में विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद सजग राष्ट्रीय चेतना के रचनाकार है। उनकी रचनाओ में उनकी राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति होती है किन्तु उनकी रचनाओं मे उनके दर्शन की छाप भी दिखाई देती है।

वस्तुत: प्रसाद का दर्शन 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' या आनन्दवाद' कहलाता है। जिसके अनुसार सुख की अवस्था से आगे एक आनन्द की अवस्था भी होती है, जहाँ क्षणिक की बजाय सतत सुख की प्राप्ति होती है तथा मन-कर्म तथा वचन में समरसता आती है।

स्कन्दगुप्त में भी उनके दर्शन की झलक दिखाई देती है। ~~उस~~ उनका नायक स्कन्दगुप्त आरंभ से ही अधिकार सुख को मादक तथा सारहीन मानता है तथा अपने कर्तव्य अर्थात देश की रक्षा से प्राप्त होने वाले क्षणिक सुख के स्थान पर एक स्थायी सुख की अनुभूति चाहता है। वह कहता है -

~~"... बौद्धों की रती..."~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"योगियों की सी समाधि, बौद्धों जैसा निर्वाण तथा पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति उसे चाहिए।"

दूसरी ओर स्कन्दगुप्त की नायिका 'देवसेना' भी सुख को क्षणिक व नश्वर मानती है तथा इसी क्षणिकता के कारण वह कोई सुख प्राप्त नहीं करना चाहती -

"सभी सुखों का अन्त है। ~~इसलिए~~ जिसमें सुखों का अन्त न हो इसलिए सुख करना ही नहीं चाहिए।"

वह अपने हृदयपक्ष को उसी तरह धारण करती है जैसे कामायनी की श्रद्धा तथा क्षणिक सुखों से दूर रहकर समरसता की स्थिति को प्राप्त करना चाहती है।

प्रसाद के दर्शन आनन्दवाद की झलक केवल स्कन्दगुप्त में ही दिखाई नहीं पड़ती बल्कि यह उनके महाकाव्य 'कामायनी' में भी दिखाई पड़ती है। आनन्दवाद की स्थिति में समरस व्यक्ति शांति को प्राप्त करता है क्योंकि "सम्पूर्ण बाहरी हलचलों का उद्देश्य आंतरिक शांति है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्कन्दगुप्त के आनन्दवाद की अभिव्यक्ति 'कामायनी' में भी देखी जा सकती है -

" समरस थे जड़ या चेतन सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती, आनन्द अखंड घना था ।।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति में 'स्कंदगुप्त' नाटक कहाँ तक सफल हुआ है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद सजग राष्ट्रीय चेतना के वाहक है। ~~उन्होंने~~ उन्होंने इतिहास का सर्जनात्मक उपयोग राष्ट्रीय चेतना के जागरण में किया। उनके इतिहास तथा नाटकों के बीच राष्ट्रीयता की छवल धारा प्रवाहित होती है।

चूंकि स्कन्दगुप्त की रचना के समय राष्ट्रीय आन्दोलन अपने परिवर्तावस्था में था अतः साहित्यकार का कर्तव्य राष्ट्रीय चेतना की जागृति था। प्रसाद ने स्कन्दगुप्त के द्वारा अपनी उसी राष्ट्र निष्ठा की पूर्ति की है -

राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति की पहली शर्त है प्राचीन गौरव के प्रति सम्मान का भाव। स्कन्दगुप्त में जो निम्नस्तरों पर दिखाई देता है -

" किसी का हमने छीना नहीं। प्रकृति का रहा पालना यही
कहीं से हम आये थे नहीं। हमारी जन्मभूमि है यही "

राष्ट्रीय चेतना की दूसरी शर्त होती है खोये हुये सम्मान की प्राप्ति तथा हीनता ग्रंथि की समाप्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके लिए विदेशी पात्रों से प्रशंसा कराई गई है। चन्द्रगुप्त की कार्नेलिया की भाँति चाणक्य भारत की प्रशंसा करता है -

"भारत समग्र विश्व का है। सम्पूर्ण पृथ्वी इसके प्रेमपाश में आबद्ध है।"

राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति के लिए स्वयं की कमियों को पहचानना आवश्यक है। भारत दुर्दशा में भारतेन्दु ने साम्प्रदायिकता को भारत की एक कमी बताया था वह स्कन्दगुप्त में भी दिखाई देती है जिसका मूल उद्देश्य हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को कम करना था। प्रख्यातकीर्ति कहता है -

"ब्राह्मण तथा बौद्ध एक ही धर्म के दो शाखायें है।"

राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान क्षेत्रवाद की समस्या जो गंभीर हो रही थी उसे दूर किया जाना आवश्यक था। स्कन्दगुप्त में उसे दूर करने का प्रयास किया है -

"सम्पूर्ण देश के कल्याण के लिए एक परिवार की भी नहीं उसके क्षुद्र हितों की बलि होने दो आर्य।" हमारा भारत लिखा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तत्कालीन विपन्नता को देखते हुये फसाद ने समाजवादी तत्वों का समावेश भी राष्ट्रीयता के पक्ष में किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्कन्दगुप्त अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की नायिका 'मल्लिका' के चरित्र पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश द्वारा अस्तित्ववादी दर्शन की अभिव्यक्ति करता हुआ नाटक है। अतः इसके पात्रों पर अस्तित्वाद का प्रभाव दिखाई देता है।

'आषाढ़ का एक दिन' की मल्लिका अस्तित्ववादी दर्शन के आधार पर एक अप्रामाणिक चरित्र है। वह अपने निर्णय स्वतंत्र रूप से नहीं ले पाती तथा कालिदास की गुलाम की भाँति रहती है।

वह कालिदास से प्रेम करती है किन्तु वह कालिदास को भावनाओं में बांधना नहीं चाहती। वह कहती है -

"जानती हूँ तुम्हें कोई रेखा बांधना चाहे तो तुम आसानी से बंध जाओगे।"

मल्लिका एक हृदयप्रधान पात्र है, जो छायावादी नायिकाओं की भाँति प्लेटोनिक प्रेम करती है तथा आध्यात्मिकता के स्तर पर पहुँच जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space

किन्तु मोहन राकेश आधुनिक जीवन को यथार्थ के धरातल पर देखते हैं और उन्होंने आदर्शवादिता का प्रवेश नहीं होने दिया जैसा स्कन्दगुप्त की देवसेना तथा कामायनी की श्रद्धा में दिखाई देता है।

मल्लिका को भी व्यावहारिक चरित्र की भाँति उन्होंने अंत में अस्तित्ववादी दर्शन के आधार पर परिस्थितियों से चालित दर्शाया है अर्थात् गरीबी के कारण वह वारांगना बन जाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मल्लिका का चरित्र हृदय प्रधान होने के बावजूद वर्तमान समय के अनुरूप व्यावहारिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation